बढ़ते कदम
सड़क एवं कामकाजी बच्चों का संघ

बालकनामा

आज के समय में सड़क व कामकाजी बच्चों को पूर्ण रूप से अनदेखा किया जा रहा है। अपने साथ हो रहे इस अन्याय के खिलाफ उन्होंने कमर कसी और सड़क व कामकाजी बच्चों की समस्याओं पर अपना एक खुद का अखबार "बालकनामा" लिखकर प्रकाशित करने लगे।

आप भी बन सकते हैं
बालकनामा अखबार का हिस्सा
1 लिखकर
2 खबरों की लीड देकर
3 आर्थिक रूप से मदद करके

बालकनामा से जुड़ने के लिए इस पते पर संपर्क करें - 31 बेसमेंट, गौतम नगर, नई दिल्ली-110049
फोन नं. 011-41644471
ईमेल- badhtekadam1@gmail.com

अंक-64 | सड़क एवं कामकाजी बच्चों का अखबार | मई, 2017 | मूल्य - 5 रूपए

सड़क एवं कामकाजी बच्चों को लोगों ने क्यों मारा ?

14 राज्यों के कामकाजी बच्चों ने रखी अपनी बात

राष्ट्रीय बाल भवन में दो दिन की मीटिंग रखी गई थी जिसके मुख्य आयोजक कम्पैन अगेंस्ट चाइल्ड लेबर हैं। इस मीटिंग में 14 राज्यों के बच्चों ने भाग लिया जिनके नाम इस प्रकार है - आन्ध्र प्रदेश, कर्नाटक, मध्यप्रदेश गुजरात, उत्तर प्रदेश, छत्तीसगढ़, दिल्ली, तमिलनाडु, झारखण्ड, उड़िसा, हरियाणा, राज्यस्थान, तेलांगना। जिसको बालकनामा की टीम ने कवर किया ।
बालकनामा के रिपोर्टरों ने जो बातें सुनी और देखी व अनुभव किया वो इस प्रकार है

–रिपोर्टर : शम्भू, चेतन व दीपक

ग्रुप में बच्चों ने नाटक और चार्ट पेपर के माध्यमों से बाल मजदूरी जैसे बड़े मुद्दे पर गहराई से चर्चा की। कैसे बच्चे बाल मजदूरी में लिप्त होते जा रहे हैं। जो बच्चे अपने घरों में काम कर रहे हैं उनके माता-पिता उनसे छोटा मोटा काम करने को बोलते हैं लेकिन बच्चे घरों में भी बड़े बडे कामों में लिप्त होते जा रहे हैं । बच्चो के माता पिता छोटे छोटे बच्चों को घरों में ही कामों में लिप्त रखते हैं वह पूरे दिन भर काम करते रहते है जो बच्चों के लिए बहुत हानिकारक है इस तरह का काम करना बच्चों के लिए खतरनांक साबित हो रहा है क्योंकि अब जो 14 साल के या उससे कम उम्र के बच्चे है वह ज्यादातर फैमली वर्क में शामिल होते जा रहे है जो अपने माता-पिता के साथ काम करवाते है और वह शिक्षा से वंचित होते जा रहे है। छोटे छोटे बच्चे आज भी अपने घरो में भारी संख्या में काम कर रहे है क्या यह बाल मजदूरी नहीं है ? सरकार ने जो कानून बनाया है कि 14 वर्षीय बच्चा बाल मजदूरी नहीं कर सकता लेकिन वह बच्चा घर का परिवारिक काम कर सकता है लेकिन वास्तव में अगर देखा जाए तो घरों के अंदर भी बच्चे कई प्रकार के खतरनाक कामों में शामिल हो रहे है । क्योंकि सरकार की घोषणा में काम के प्रकार की शायद व्याख्या नहीं की गई और इसलिए बच्चे अब ज्यादातर घरों में ही कामो में लिप्त होते नजर आ रहे हैं बच्चों के लिए काम करने के प्रकार की परिभाषा नहीं बताई गई कि वह घर में किस प्रकार का काम कर सकते है । बच्चों ने इस बात पर बड़ी नारजगी जताई और गंभीरता के साथ बताया कि इसी वजह से वह शिक्षा से वंचित हो रहे है क्योंकि बच्चों पर काम करने के लिए माता पिता भी दबाव डालते हैं। इसलिए बच्चों की पढ़ाई की ओर से ध्यान भटकता चला जाता है। वह एक लालच की ओर बढ़ने लगते हैं ओर उनके दिमाग यह बात बैठा दी जाती है कि पढ़ाई करके पैसे कैसे मिलेंगे सिर्फ काम करने से ही पैसे घर में आते है जिससे माता पिता को सहारा लगता है। उसके बाद बच्चों ने चार्ट पेपर के माध्यम से बताया कि बाल अधिकार समझौते में लिखा है कि अगर किसी बच्चे के माता-पिता को सही वेतन रोजगार नही मिल रहा है तो सरकार की यह जिम्मेदारी बनती है कि उन बच्चों के माता पिता की मदद करे ताकि उनके घरों की स्थिति ठीक रह सके और वह अपने बच्चे को स्कूल भेज सकें। उनके बच्चों के अधिकारों का हनन ना हो। बच्चों ने बताया कि जो लोग बच्चों से जबरदती काम करवाते हैं उन लोगों को कानूनी शिंकजे से बचाया नही जा सकता। हम सभी बच्चे उन लोगों के खिलाफ हैं जो लोग किशोर अवस्था में बच्चों से काम करवाते हैं।

सरकार ने यह तो घोषणा कर दी कि बच्चे गैर खतरनाक काम कर सकते हैं और बात का लोग बच्चों से फायदा उठा रहे हैं लोग हम बच्चों का गलत उपयोग भी कर रहे है गैर खतरनाक काम बोल कर खतरनाक काम में बच्चों को शामिल किया जा रहा है । सरकार ने हम बच्चों की काम करने उम्र 14 साल बोलकर बच्चों को काम करने की आज्ञा दे दी है कि बच्चा इस उम्र में गैर खतरनाक काम कर सकता है । लेकिन सड़क एवं कामकाजी बच्चों ने इस बात पर बहुत नाराजगी जताते हुए कहा कि ऐसा बिल्कुल नहीं होना चाहिए कि 14 साल का बच्चा काम कर सकता है । यह फैसला हम बच्चों के विरूद्ध है यह फैंसला बंद किया जाए और जो हमारी 18 साल आयु थी वही रहना देना चाहिए। किसी को भी यह हक नहीं है कि कोई हमारी उम्र के साथ खिलवाड़ करें। इस तरह सड़क एवं कामकाजी बच्चों ने अपनी चिंता जाहिर की और दूसरी ओर बच्चों ने अपनी खुशी जाहिर करते हुए कहा कि बाल मजदूरी पर अर्जेंटाइना में वर्ल्ड कांफ्रेंस होने वाला है और वह पूछ भी रहे हैं कि हमारे देश के कानून और बालश्रम की क्या दशा है और भारत के लोग भी वहां पर उपस्थिति रहेंगे और वह हम सभी काम करने वाले बच्चों से पूछ रहे है कि हमारे देश में बच्चों की क्या स्थिति है । फिर नाटक करने वाले बच्चों ने 14 राज्यों से आए हुए बच्चों को बताया कि हम बच्चों के पास एक सुनहेरा मौका है अपनी बातों को रखने के लिए । हम उस कार्यक्रम में शामिल होकर अपने देश के बच्चों कि दशा उन तक पहुंचा सकते है ताकि वह लोग हम जैसे कामकाज करने वाले बच्चों की मदद कर सकें और हम अपनी जिंदगी में आगे बढ़ने में सक्षम हो पाएं।

वहां जो बातें हुई उसके कुछ मुख्य अंश इस प्रकार हैं

- सरकार हम सड़क एवं कामकाजी बच्चों से सबंधित कोई भी कानून बनाती है तो हम बच्चों से सलाह अवश्य लेना चाहिए
- जो लोग बच्चों से जरबदस्ती काम करवाते हैं उन्हें बच्चों से काम नहीं करवाना चाहि ए और बच्चों के अधिकारों का हनन नहीं करना चाहिए।
- सड़क एवं कमाकाजी बच्चों के लिए वोकेशनल टेजनिंग सेंटर खोले जाएं जिसमें उन्हें उनका मन चाहा काम सिखाया जा सके उनकी कलाओं के हिसाब से ताकि उनका आने वाला

शेष पृष्ठ 2 पर

सड़क एंव कामकाजी बच्चों को लोगों ने क्यों मारा?

- मध्य प्रदेश भोपाल चेतकब्रिज 16 वर्षीय परिवर्तित नाम आकाश : मैं चाय की दुकान पर काम करने जाता हूं। अगर मैं थोड़ा सा भी लेट हो जांऊ तो मेरा मालिक मुझे मारता है और मुझे धमकाकर भगा देता है ।
- 15 वर्षीय परिवर्तित नाम रेशमा: मैं रेलवे स्टेशन पर रहती हूं और लोग मुझे अश्लील काम करने के लिए कहते है अगर मैं वह काम करने के लिए राजी नहीं होती हूं तो वह लोग मेरे साथ मारपीट करते हैं।
- 15 साल परिवर्तित नाम अंकित : मैं घर घर में कूड़ा उठाने का काम कारता हूं जब भी कूड़ा घर से ले जाता हूं तो सीढ़ीयों पर कूड़ा गिर जाता है तो मालिक गाली गलौज करते हैं कभी कभी मार भी देते हैं।
- 14 वर्षीय परिवर्तित नाम आरती : मैं बाजार में खिलौने बेचने का काम करती हूं। जब भी मैं बाजार में खिलौना बेचने के लिए जाती हूं लोग मुझे मारने लगते है और उस बाजार से भगा देते है ।
- 17 वर्षीय परिवर्तित नाम रवि: मैं रेलवे स्टेशन पर कबाड़ा बीनने जाता हूं वहां पर लोग मुझे गलत समझते हैं और मारकर भगा देते हैं।
- 15 साल की परिवर्तित नाम आशा: मैं लालबत्ती पर भीख मांगने का काम करती हूं । तब लोग मेरे से अश्लील बातें करते हैं और कभी कभी मारपीट करते हैं।
- 13 वर्षीय परिवर्तित नाम कुंदन : मैं गैरज की दुकान पर काम करता हूं। मेरे मालिक मुझे गाड़ी के भारी समान उठाने के लिए बोलते हैं अगर समान नहीं उठते है तो गाली देते हैं और औजार से मार देते हैं।
- 17 वर्षीय परिवर्तित नाम पायल : मैं कोठी में काम करती हूं। मेरे से कोई गलती नहीं होती है तो फिर भी मेरी मालिकन मुझे मारती है।
- 14 वर्षीय परिवर्तित नाम हरि: मैं ढ़ाबा पर बर्तन धोने का काम करता हूं। एक दिन मुझसे कांच का ग्लास टूट गया जिसकी वजह से मेरे मालिक ने मुझे मारा और एक माह का पैसा भी नहीं दिया।
- तमिलनाडु परिवर्तित नाम शालू : मैं मिल में काम करती हूं वहां सारा दिन काम करना पड़ता है अगर मुझे शौचालय जाना होता है तो नहीं जाने देते हैं अगर दो तीन बार बोलूं कि मुझे शौचालय जाना है तो गाली गलौज से बात करते हैं और मारने भी लगते है।

–रिपोर्टर : शम्भू, चेतन व दीपक

संपादकीय

प्रिय साथियों,

नमस्कार !

सड़क एवं कामकाजी बच्चों की ओर से आप सभी को अंतराष्ट्रीय सड़क एवं कामकाजी बच्चो के दिवस के उपलक्षय में हमारी ओर से बहुत शुभकामनाएं ।

साथियों हर बार की तरह इस बार भी हम बच्चो का अखबार बालकनामा एक नए अंक साथ सच्ची घटनाओं व अखबारो को लेकर प्रकाशित हुआ है।

सड़क एवं कामकाजी बच्चों के लिए यह बेहद खुशी की बात है कि सड़क एवं कामकाजी बच्चों को (यू.एन.सी. आर.सी) में मान्यता मिल गई है । और यह मान लिया है कि विश्व में सड़क एवं कामकाजी बच्चे होते है और उनकी निम्न समस्याएं है जिसका समाधना करना बहुत ही महत्वपूर्ण है।

हम बच्चे बहुत अभारी है कि बच्चो को मान्यता मिली है अब हमें कोई अंदेखा नहीं कर सकेगा और कुछ बेहतर किया जा सकेगा ।

इसी को लेकर हम सड़क एवं कामकाजी बच्चे ला रहे हैं (अब समय हमारा है क्या आप हमें सुन रहे हैं) और कुछ ऐसे संघर्ष से जूझती सच्ची कहानियां ।

आशा करते हैं कि आपको इस बार का अंक पसंद आएगा आपकी प्रतिक्रियाएं ऊपर लिखे पते पर आवश्यक भेजने का कष्ट करे।

संपादकीय टीम

माता-पिता स्वयं करा रहे बच्चों का यौन शोषण

रिपोर्टर विजय कुमार

पत्रकार जब लखनऊ के झुग्गी बस्ती में रहने वाले बच्चों से बात की तो पता चला कि यहां पर रहने वाले बच्चों के साथ गलत हो रहा है। लेकिन कोई भी इस बात को बताने के लिए तैयार नही है। पत्रकार इन बच्चों से बात की तो वह बच्चे काफी डरे व सहमे हुए थे और बताने को भी राजी नही थे। पर 13 वर्षीय बालिका ने बताया कि मेरी मां जबरजस्ती मुझे बड़े अंकल के पास भेजती है और उनसे पैसा लेती है। मना करने पर मारपीट करती है और खाना भी नही देती तो मुझे मजबूरन जाना पड़ता है। लेकिन हम अपनी परेशानियों को किसे बतायें। 14 वर्षीय बालिका से जब पत्रकार ने बात की और उनकी समस्या पूछी तो बताया कि यहा के कुछ प्रभुत्व लोग भी हमारी मां के साथ अश्लील काम करते है। जब हमारी मां या हम लड़कियां एरिये में लक्कड़ बीनने जाते है तो वहा के स्टाफ पकड़ कर अश्लील काम करते है और कई बार हम लड़कियां लक्कड़ बीनने के लिए जाते है तो लाधी हुई लक्कड़ भी ले लेते है और मारपीट भी करते है। यहा पर रहने वाले कुछ लोगो से बात की तो पता लगा की इन बस्ती वालो का यही पेशा है।

कई बार तो पास के कालोनी वाले आते है और अश्लील काम करने के पैसे देते है। इनके माता पिता भी इस काम में शामिल है। यह लोग आपको अपनी झूठी कहानी भी सुना देगे। इनको हम बच्चें कई सालो से देखते आ रहे है। इनमें कोई सुधार नही आया है।

12 व 15 साल की लड़कियों से बात की तो जानकारी प्राप्त हुई की यह लगभग 40 से 50 मासूम बच्चों को गलत कार्यो में जबरजस्ती इनके जानने वाले व उनके माता पिता शामिल कराते है। यहां के 50 प्रतिशत बच्चे स्कूल नही जाते और इनके माता पिता भेजना भी नही चाहते है।

यहा के बच्चे अपने पिता के साथ बंदर का खेल दिखाने का काम करते है एवं भीख मांगने, जूता पॉलिश, कान का मेल साफ करने का काम करते है। पत्रकार ने इन बच्चों से बात की तो बच्चों ने अपनी बात रखी की हम बच्चे भी पढ़ाई करना चाहते है। लेकिन हमारे माता पिता हम बच्चों से जबरजस्ती गलत काम करवाते है।

गाड़ियों के ठीक करके चलता है घर का खर्चा

बातूनी रिपोर्टर विकास रिपोर्टर चेतन

लोहामंडी जहां पर हर प्रकार के लोहे का व्यपार किया जाता है। यह मंडी एक ऐसा मंडी है। जहां पर लोग दूर दूर से गाड़ीयां लेकर आते है लोहा खरीदने के लिए। लेवर गाड़ी में लोहा लोड करते है। इस मंडी में दो बच्चे ऐसे है जो गाड़ीयां ठीक करने का काम करते है। एक बालक की उम्र है 14 साल दूसरे की उम्र है आठ साल यह दोनो जो भी गाड़ी खराब होती है उसको ठीक करते है। जैसे गाड़ी की टंकी में पानी कम हो जाता है तो उसमे पानी भरते है। पत्रकार इन दोनो बच्चे से पूछा कि आप लोग ही इस गाड़ीयों को क्यों ठीक करते हो ? बच्चे ने बताया कि जब गाड़ी लोहा से लोड हो जाती है तो उसे कही नही ले जा सकते है। क्योंकि अगर दूबारा गाड़ी खाली करेगा तो लेवर को दूवारा पैसा देना पड़ेगा। इसलिए हम दोनो बच्चे इसी मंडी में घुमते रहते है। जिसको भी हमारी जरूरत होती है। वहलोग बुला लेते है। पत्रकार दोनो बच्चों से पूछा कि आप दोनो तो बुहत छोटे हो यह काम कैसे कर लेते हो ? 14 वर्षीय बालक ने बताया कि यह काम बपचन से करते आ रहे है पहले डर लगता था। अब डर नही लगता है। ऐसे भी एक गाड़ी ठीक करने का 40 से 50 रुपए मिलता है जिससे हमारा घर का गुजारा होता है। पत्रकार पूछा गाड़ी ठीक करते वक्त कोई परेशानी होती है ? 8 साल का बालक ने बताया भईया जब गाड़ी पेंमचर हो जाती है तो उस वक्त बहुत परेशानी होती है क्योंकि जब हम टायर की नट खोलते है तो बहुत जोर की ताकत लगानी होती है। जिससे हम दोनो के शरीर में बहुत तेज दर्द होता है यह काम हम दोनो अपनी मजबूरी में करते है।

खुलेआम करते मासूम बच्चे कच्ची शराब की सप्लाई

बालकनामा ब्यूरो

इन बच्चों की उम्र 10 से 15 साल तक है यह बात सुनते ही पत्रकार चैक गया कि इतने छोटे बच्चे ऐसा काम कैसे कर लेते है और छानवीन किया तो पता चला कि इन बच्चों के माता पिता कच्ची शराब बनाते है और वह खुद सप्लाई नही करते है। उनके पास जो भी छोटे बच्चे होते है उन बच्चों से जबरन कच्ची शराब बेचवाते है। 15 वर्षीय बालक ने बताया कि भईया हम बच्चे सुबह से रात नौ बजे तक इसी काम में लिप्त रहते है। हम बच्चे बाजार में भी सप्लाई करते है और ज्यादातर लोग हम बच्चों के पास ही खरीदने के लिए आते है क्योंकि उन सभी लोग को पता है कि हम बच्चों के अलावा यहां कच्ची शराब कोई नही बेचता है। हम बच्चों के माता पिता ने पान और गुटके की दुकान लगा रखी है। लोग पान खाने की वजह से हमारे दुकान पर आते है और कच्ची शराब लेकर जाते है। पत्रकार बच्चों से पूछा कि आप बच्चों को पुलिस वाले भईया से डर नही लगता कच्ची शराब सप्लाई करते हुए। बच्चों ने बताया कि हमारे पास तो पुलिस वाले भईया भी शराब लेने के लिए आते है। अगर कभी ज्यादा बोलने लगते है तो हमारे माता पिता सम्भाल लेते है। हम बच्चों को कोई परेशानी नही है। पत्रकार बच्चों से पूछा कि आप बच्चे यह कच्ची शराब कहां से लाते हो ? 14 वर्षीय बालक ने बताया कि हम बच्चे कही से खरीद कर नही लाते है हमारे माता पिता खुद बनाते है। यह काम हमारे माता पिता कई सालो से करते आ रहे है। पत्रकार पूछा कितने रुपए का एक पैकेट देते हो? बच्चों ने बताया कि वह तो आप पे निर्भर है कि आपको कैसा सा चाहिए हम बच्चे तीन तरह के कच्ची शराब की पैकेट बेचते है एक तो काफी छोटा होता है दूसरा उसे हल्का बड़ा। तीसरा उससे भी बड़ा होता है। वह पैकेट की मुताबिक अलग अलग पराईज है। पत्रकार बच्चों से पूछा कि आप बच्चे स्कूल जाते हो क्या? 16 साल का बालक ने हस्ते हुए कहा कि जब से हम बच्चों ने अपना होश सम्भाला है तब से शराब कैसे बेचते है वही सिखा है। पढ़ाई लिखाई के बारे में हमारे माता पिता ने भी कभी जिक्र नही किया। उनको सिर्फ पैसो से मतलब होता है। हम बच्चे पूरे दिन इसी कामों में लिप्त रहते है। 14 साल का बालक बताया ने कि एक बार मैने अपने माता से बोला कि मुझे स्कूल जाना है तो डाट कर बोली स्कूल जाकर क्या मिलेगा सिर्फ काम करो। जब से मेरा पढ़ाई का सपना। सपना बन कर ही रह गया।

14 राज्यों के कामकाजी बच्चों ने रखी अपनी बात

पृष्ठ 1 का शेष

भविष्य गलत स्थिति में नहीं पड़े।

● किसी भी प्रकार का हम बच्चों का शोषण नहीं करना चाहिए। बच्चे अब अपने अपने घरों में भी भारी काम नहीं कर सकते क्योंकि वह भी एक बाल मजदूरी है और तो और बच्चे अपने घरो में 15 से 20 मिनट तक काम कर सकेंगे। क्योंकि उन बच्चों का पढ़ाई करने का समय बर्बाद होता है खेलने और विकास भी फिर सही ढंग से नहीं हो पाता है।

जो बच्चे इस कार्यक्रम में आए हुए थे वह 14 अलग अलग राज्यों से थे और इन बच्चों ने भी अपना जीवन बहुत कष्ट में जिया है । इन बच्चों में कुछ ऐसी लड़कियां शामिल थीं जिन्होनें शादियों में लाईट के गमले उठाने का काम किया है। और कुछ लड़के जिन्होनें ईट ढोने का काम किया है इन बच्चों ने लेबर डिपार्टमेंट के सदस्य श्री ओमकार शर्मा जो बच्चों की हितों की बातें सरकार तक ले जाते हैं उनके सामने बच्चों ने रखे कुछ सवाल-

● क्या 14 से 18 साल तक का बच्चा काम नही करता है?

● 7 से 14 साल तक के बच्चों को स्कूल से आने बाद काम करना जरूरी है?

● अगर परिवारिक व्यापार में हाथ बटाएं तो क्या यह बाल मजदूरी नहीं है?

4) श्री ओमकार शर्मा जी - कोई भी व्यक्ति बच्चों से काम कराता है तो उसे 6 महीने की जेल होगी और बीस हजार रुपए जुर्माना लग सकता है। उन्होने बताया कि 14 से 18 साल के बच्चों को किशोर अवस्था कहते है जो सरकार द्वारा लागू की गई है। अगर आप इस तरह के बच्चों को काम करते हुए देखते हो तो आप सोशल मीडिया पर बता सकते हैं ताकि उन बच्चों की मदद की जा सके।

CHILDREN'S HELP LINE NUMBERS

CONTACT THESE TOLL FREE NUMBERS IF YOU FACE ANY PROBLEM.

Child line Number
1098
Police Helpline Number
100

गर्मी में तड़प रहे हैं सड़क एवं कामकाजी बच्चे

बालकनामा ब्यूरो

पत्रकार ने बच्चों से पूछा कि आप बच्चे गर्मी में कैसे रह रहे हो ? 15 वर्षीय बालक ने बताया कि पड़ती हुई गर्मी की गरमाहट से हम बच्चे बहुत परेशानी हो रहे है। अभी धूप बुहत तेज होने लगी है। इसलिए हमारा काम भी मंदा हो गया है। क्योंकि पहले हम बच्चे पूरी दिन बाजार में सामान बेचते थे। अभी ऐसा नही हो पा रहा है काफी धूप होती है इसलिए हम बच्चे शाम को काम करते है। पुल और रैन बसेरो में रहने वाले बच्चों ने बताया कि हम बच्चों को पानी की बहुत तकलीफ हो रही है। रैन बसेरे के बाहर पत्रकार ने देखा कि तीन पानी के सिनटैक्स रखे है। पर उसमें में एक बून्द पानी नही है। बच्चों ने बताया कि भईया सुबह शाम दिल्ली जल बोर्ड की गाड़ी आती है। लेकिन यहां पर रहने वाले लोगो की जनसंख्या ज्यादा होने के कारण तीन टंकिया पानी भी कम पड़ जाता है। क्योंकि गर्मी में हम बच्चे पानी ज्यादा ही इस्तेमाल करते है। इसलिए टंकियों का पानी खत्म हो जाता है। इसका पानी भी अच्छा नही होता है। क्योंकि ठन्ड से पहले ही यह तीन सिनटैक्स इस जगह पर लगाए गए थे और काफी महिनों से सफाई भी नही हुई और उसका ढक्कन भी टूटा हुआ है। इसलिए इसके अंदर कचड़ा चला जाता है। इसी वजह से पानी भी गंदा व गर्म होता है पीने पर बधबू आती है फिर भी हम बच्चे यही पानी पीते है। जब इस टंकी में पानी नही होता तो हम बच्चे रेलवे स्टेशन पर पानी भरने के लिए जाते है वहां पर भी पुलिस वाले भईया मारते है। फिर एक मंदिर पर जाते है। वहां से भी भगाया जाता है। बच्चे ने बताया कि मार्किट में गुरूनांनक प्याऊ है वहां पर ठन्डा पानी मिलता है। और सभी लोगो को मुफ्त में पीने के लिए दिया जाता है। लेकिन हम सड़क एवं कामकाजी बच्चे पानी पीने जाते है तो वह अंकल पानी पीने के लिए नही देते और मारने लगते है और डरा धमका कर भगा देते है।

माता-पिता को काम नहीं मिलने की वजह से जलता बचपन

बालकनामा ब्यूरो

लगभग 20 से 25 बच्चों को अलग अलग स्थान से काम कराने के लिए लाया गया है और यह बच्चों को खास काम कराने के लिए लाया जाता है। इनमें से कुछ बच्चे बिहार यू पी राज्यस्थान व बंगाल के है। पत्रकार को बच्चों द्वारा जानकारी मिली कि यह बच्चे पूरे दिन काम में लिप्त रहते है लेकिन यह बच्चे शाम को ही दिखाई देते है। यह बात को पता करने के लिए पत्रकार शाम को विजिट करी। पत्रकार ने देखा कि 14 साल का एक बच्चा मोमोस की दुकान पर काम कर रहा है शाम होते ही मोमोस की दुकान पर काफी लोग इकट्ठे हो जाते

है। कि वह बच्चे से मोमोस तक तले ही नही जाते। फिर भी काफी परेशान होकर वह बच्चा मोमोस तलता रहा है। लोगो के जाने के बाद पत्रकार उस बच्चे से बात करना चाहा पर उस बच्चे ने कुछ नही बोला चार पांच दिन लगातार उस बच्चे से सम्पर्क करने के बाद उस बच्चे ने बात की। फिर पत्रकार पूछा कि आप क्यों नही बात कर रहे थे। उस बच्चे ने बताया कि भईया जब भी आप मेरे से बात करना चाहते थे उस वक्त मेरे आस पास दूसरा लड़का खड़ा हुआ था जिसको मेरे मालिक ने हम बच्चे की निगरानी के लिए रखा है। इसलिए मैं आप से बात नही कर रहा था। उस लड़के को हमारा मालिक ही भेजता है ताकि हम बच्चे कही पैसे को छूपाकर रख तो नही लेते है। पत्रकार ने इस बच्चे से पहला सवाल पूछा कि मुझे पता चला कि आप बच्चे पूरे दिन काम करते हो पर यह मोमोस की दुकान शाम को ही लगती है तो आप पूरे दिन काम में कैसे लिप्त रहते हो ? बालक ने बताया कि भईया हां यह सही बात है कि मोमोस कि दुकान शाम को ही लगती है लेकिन हम बच्चे पूरे दिन मोमोस वेज रोल नोनवेज रोल यह सब पूरे तैयार करते रहते है। हमारे जो मालिक है वह सिर्फ सामान लेकर रख देता है। हमारे साथ एक बड़े अंकल है। उन्के साथ मिलकर सब मोमोस तैयार करते है। पत्रकार दूसरा सवाल पूछा कि आप बच्चों को काम करते वक्त कोई परेशानी भी आती है बच्चों ने बताया कि पुलिस वाले भईया लोग से तो कोई परेशानी नही होती है क्योंकि उन्को तो हमारा मालिक ही सम्भाल लेता है। हम बच्चों को मोमोस और रोल तलने में परेशानी होती है। क्योंकि जहां हम बच्चे दुकान लगाते है। वह जगह भीड़भाड़ वाली जगह होती है। ज्यादा लोगो के आने से बुहत परेशानी होती है। पत्रकार तीसरा सवाल पूछा कि आप बच्चे गांव से यहा पर काम करने के लिए क्यों आए हो और प्रतिमाह कितने पैसे देते है ? 15 वर्षीय बालक ने हंसते हुए कहां कि भईया जब हमारे माता पिता को गांव में कुछ नही मिलता है। इसलिए तो हम पढ़ाई लिखाई छोड़कर ईधर ऊधर काम की तलाश में धुमते रहते है और प्रति माह तीन हजार रुपए देते है।

नये पुलिस अधिकारी आने पर परेशान हैं स्टेशन पर रहने वाले बच्चे

बालकनामा ब्यूरो

स्टेशन पर रहने वाले बच्चों ने अपनी दुख भरी खबर बताते हुए कहां कि हम बच्चे स्टेशन पर अपना पेट पालने के लिए कबाड़ा बीनते है। लेकिन स्टेशन पर जो भी नऐ पुलिस अधिकारी आते है वह हम बच्चो से गलत व्यवहार से बात करते है। बालक ने अपने बारे में जिक्र करते हुए कहां कि मैं अपने घर से इसलिए भागकर आया था कि मेरे घर में सभी लोग मुझ पर अत्याचार करते थे इसलिए मैं अपना घर छोड़ दिया। और स्टेशन को घर के रूप में चुना। हम बच्चे चार साल से इस स्टेशन पर रह रहे है। अभी हाल ही में पुलिस वाले भईया से इतनी दोस्ती हो गई थी कि वह हमारा दुख दर्द सुनते थे और पूरी तरह से मदद करते थे। हम बच्चे भी अपनी देखरेख और अच्छी से पढ़ाई लिखाई करते थे। लेकिन दुख कि बात यह कि जो पुराने पुलिस अधिकारी हम बच्चों को जानते थे उनको दूसरी स्थान पर ट्रांस्फर कर दिया गया है। अब जो नऐ पुलिस अधिकारी आये है वह हम बच्चों पर आत्याचार करते है। हम बच्चों को स्टेशन पर देखना नही चाहते है। जैसे ही हम बच्चे रेलगाड़ी में बोतले बीनने के लिए जाते है। वैसे ही पुलिस अधिकारी डन्डे लेकर दौड़ते है। पहले पुलिस वाले भईया ने हमारे लिए रात को सोने के लिए इंतजाम किया था। लेकिन जैसे ही वह यहां से गये तब से हम बच्चों पर मुसीब्बत ही आ गई। पहले हम बच्चे एक साथ मिलकर रहते थे। वर्तमान में ऐसा नही है फिर से हम बच्चों को वही प्लेटफोर्म पर सोने को मिलता है। वही परेशानी दोबारा आने लगी है। इसलिए हम बच्चे चाहते है कि जब भी पुलिस वाले भईया को दूसरी स्थान पर ट्रांस्फर करते है तो हम बच्चों के लिए एक नोटिस लिखकर छोड़ दे ताकि नऐ पुलिस वाले भईया हम बच्चों को परेशान ना करे।

मां के साथ मजबूरीवश रहती बच्ची के साथ हो रहा अत्याचार

बालकनामा ब्यूरो

यह खबर दो बच्चों की है यह दोनो बच्चे अपने परिवार के साथ गावं में बहुत खुश रहते थे लेकिन जब से इनके पिता की मृत्यु हो गई है तब से इसके माता कि मानसिक स्थिती खराब हो गई है। और इसे कुछ पता नही की क्या गलत और क्या सही है इन दोनो बच्चों के चाचा चाची ने गांव से भागा दिया है। वर्तमान में यह दोनो बच्चे और इनके मां एक मंदिर पर एक साथ रहते है इनकी मां खुद काम नही करती है हर वक्त नशे में लिप्त रहती है। इनकी मां की मानसिक स्थिती खराब होने के कराण लोग इनके बच्चों के साथ लोग गलत काम करते है दो बच्चों में से एक लड़का है जिसकी उम्र 12 साल है दूसरी बच्ची जिसकी उम्र 15 साल है। बातूनी रिपोर्टर

दूवारा यह जानकारी मिली के इसके साथ लोग गलत काम करते है क्योंकि यह लोग मंदिर के बाहर सोते है रात को कोई भी उठाकर ले जाते है और इस बच्ची के साथ अश्लील हरकत करते है। आस पास रहने वाले बच्चों ने बताया कि लोग इसके माता को कुछ पैसे देते है। बातूनी रिपोर्टर ने जब इस बच्ची से बात की तो उस बच्ची ने अपने बारे पूरी तरह से बताया कि लोग मेरे साथ किस तरह से व्यवहार करते है जब लोग मेरे साथ अश्लील हरकत करते है तो बहुत तेज दर्द होता है। जब मैं अपनी मां से बोलती हूं तो वह कुछ नही बोलती है। और बच्ची का कहना है मेरी मां को सिर्फ शराब से मतलब है। उन्हे कोई भी व्यक्ति शराब लेकर देता है तो मेरे मां बोलती है कि ले जाओ मेरी बेटी को। मैं चाहती हूं कि इस परेशानी से मुक्ती मिले पर ऐसा नही हो रहा है। बातूनी रिपोर्टर यह बात सुनते ही बोला कि आप शेल्टर होम क्यों नही चले जाते हो। आप उस जगह पर सुरक्षित रहोगे। पर इस बच्ची ने बोला कि मैं चाहकर भी कही नही जाती क्योंकि मेरी मां अकेली हो जाएगी इसलिए मैं जाना नही चाहती हूं।

भीख मांगना छोड़ दिया तो कैसे चलेगा घर का खर्चा

बालकनामा ब्यूरो

17 वर्षीय नेत्रहीन बालिका और उसके साथ उसकी मां एक साल के छोटे बच्चे को गोद में लिए कड़ी धूप में लाल बत्ती पर भीख मांग रहे थे। यह देख बालकनामा के पत्रकार उसके पास जा पहुंचे और उनसे बातचीत के दौरान पता चला कि उन्हें लाल बत्ती पर भीख मांगने के लिए क्यों आना पड़ा। उस नेत्रहीन बालिका ने अपनी दर्द भरी दांस्तां बताते हुए कहा कि उसका एक व्यक्ति से विवाह हुआ था जब वह 14 साल की थी। उसके बाद जब वह गर्भवती हुई तो उसके पति ने उस पर अत्याचार करना शुरू कर दिया उसे परेशान रखने लगा। इसके साथ साथ घर का खर्चा भी देना बंद कर दिया और रोज मार पीट करने लगा। इन्हीं दिनो उसके बच्चे ने जन्म लिया बच्चे के जन्म लेते ही बच्चे के पिता ने कमाना शुरू किया और शादी पार्टी के काम पर जाने लगा। लेकिन एक रोज बालिका के पति के साथ शादी पार्टी के काम पर ही उसके साथ दुर्घटना हो गई उसके पति के हाथ पर एक बिजली का तार टूटकर गिर पड़ा और इस हादसे में उसके पति का एक हाथ खराब हो गया इस वजह से बालिका के पति ने बिल्कुल काम करना बंद कर दिया। वह घर में ही रहने लगा। और इस तरह घर का पालन पोषण बंद हो गया था ऐसे में एक नेत्रहीन बालिका को भीख मांगने के अलावा और कौन सा काम मिल सकता था यह सोंचकर मैं और मेरी मां मेरे एक साल के छोटे बच्चे को लेकर लाल बत्ती पर भीख मांगने का काम करने लगे जिससे हमारा घर का खर्चा चलता है और मेरे पति और बच्चे का पालन पोषण आसानी से हो जाता है। नेत्रहीन बालिका ने बताया कि मैं भीख मांगने के बाद अपने घर का भी काम करती हुं और मेरे घर का खाना पकाने का काम मेरी मां कर देती है क्योंकि मुझे दिखाई नहीं देता मैं खाना पकाने में सक्षम नहीं हुं मैं सिर्फ अपने घर में झाड़ू पौछा लगाने का काम करती हुं और अपने बच्चे की देखरेख भी कर लेती हुं बालिका ने बताया कि भीख मांगते वक्त मुझे बहुत तकलीफ होती है क्योंकि लालबत्ती पर बहुत तेज गाड़ीयों का आना जाना लगा रहता है। इसलिए मैं अपनी माता के साथ आती हूं। वह मेरा हाथ पकड़ कर इधर ऊधर ले जाती है क्योंकि मेरे लिए तो हर तरफ अंधेरा ही अधेरा है मैं सिर्फ लोगो की आवाज़ सुन सकती हूं। मैं चाहती हुं कि सरकार मेरी और मेरे बच्चे की देखरेख के लिए कुछ संज्ञान ले मै चाहती हुं कि मेरे जैसे बच्चों की जल्द से जल्द सरकार मदद करें ताकि उन्हें अपना पालन पोषण करने के लिए भीख न मांगना पड़े।

मुफ्त के इंटरनेट का किया जाता है गलत उपयोग

बड़े-व्यक्ति छोटे बच्चों को दिखाते अश्लील वीडियो

बालकनामा ब्यूरो

अक्टूबर 2016 से जीयो सीम मुफ्त सेवा शूरू हुआ है जब से लोगो ने भरपूर इंटरनेट व कोलिंग का आन्नद उठा रहे है लेकिन दूसरी ओर स्टेशन पर रहने वाले बच्चों पर इसका गलत प्रभाव पड़ रहा है। बच्चों ने बताया कि भईया लोग तो इसका आन्नद उठा रहे है लेकिन हम स्टेशन पर रहने वाले बच्चों को जीना दुश्वार हो गया है क्योंकि स्टेशन पर बहुत छोटे छोटे बच्चे और कुछ लड़कियां भी कबाड़ा बीनने के लिए आती है। 15 वर्षीय बालक ने बताया कि भईया एक बड़ा व्यक्ति है वह भी जीयो सीम इस्तेमाल कर रहा है। वह हर वक्त अपने फोन में अश्लील वीडियो देखता रहता है। शाम को जब हम बच्चे कबाड़ा बीनने के लिए जा रहे थे तो हम बच्चों ने देखा कि सफाई लाईन के पास जो रेलगाड़ी खड़ी होती है। उस रेलगाड़ी में चार बच्चे थे साथ ही वह व्यक्ति भी था जो अश्लील वीडियो देखता है हमे तो मालूम है कि वह सही व्यक्ति नही है पर उन चार बच्चों को इस व्यक्ति के बारे में बिल्कुल नही पता। इसी वजह से उनके शिकेजे में आए गये। जब हम बच्चे उस रेलगाड़ी तक पंहुचे तब तक वह अपना फोन बंद कर चुका था। मैंने उन बच्चों से पूछा जो उस व्यक्ति के पास थे। कि आप बच्चे यहां पर किया कर रहे हो ? बच्चों ने बताया कि भईया हम तो कबाड़ा बीनने के लिए जा रहे थे तभी ये भईया हम बच्चों को बुलाया और अपने फोन में गंदी वीडियो दिखाने लगे। जब हम देखने से मना करने लगे तो ये भईया बोलने लगे कि अगर ये वीडियो नही देखोगे तो मै इस स्टेशन पर कबाडा बीनने नही दूंगा। इसलिए हम बच्चे इसके दबाव में आकर अश्लील वीडियो देख रहे थे। 16 वर्षीय बालक ने बताया कि भईया पहले मैं भी उस व्यक्ति का शिकार हो गया था जैसे इन बच्चों को बुलाया है। वैसे मुझे भी बुलाया था और अच्छी वीडियो बोलकर अश्लील वीडियो दिखाने लगा। और मेरे शरीर के अंगो को स्पर्श करने लगा। तभी मैं वहां से भाग निकला। 14 साल की बालिका ने बताया कि पहले ईतनी परेशानी नही थी। जितना जीयो सीम आने से हुआ है। लड़कियां तो लड़कियां लड़के भी सुरक्षित नही है अब पहले बड़े लडके इस तरह की अशलील फिल्म नहीं देखते थे क्योंकि पहले पैसे खर्च होते थे लेकिन जब से फ्रि इंटरनेट की सुविधाएं आईं हैं तब से यह लड़के दिन रात अश्लील फिल्म देखते हैं और छोटे छोटे बच्चों को जबरन यह अश्लील फिल्म दिखकर उनके साथ शौषण भी करते है। इस वजह से बहुत बच्चे के साथ शौषण हो रहा है।

घर से भागे हुए बच्चों को बनाया जाता है मोहरा

बालकनामा ब्यूरो

पत्रकार स्टेशन पर रहने वाले बच्चों के साथ सपोर्ट ग्रूप मीटिंग की मींटिग के दौरान बच्चे अपनी परेशानियों को रखते हुए बताते है कि भईया अब हम बच्चों को स्टेशन पर बोतल कम मिलने लगा है। इसलिए हम बच्चे पूरे दिन ईधर ऊधर घूमकर बोतल बीनते है एक दिन हम बच्चे कनाड प्लेस गए थे। वहां पर हम बच्चों ने देखा कि बहुत सारे हमारे जैसे बच्चे बोतल बीन रहे थे यह देखते ही हम बच्चे चैक गए कि दो दिन पहले यहां पर कोई बच्चा बोतल बीनते नजर नही आ रहा था आज आचानक इतने सारे बच्चे कहां से आ गए 15 वर्षीय बालक ने एक बच्चे से बात करना चाहा पर उस बच्चे ने बात नही की वह डरकर भाग गया। दूसरे दिन इन बच्चों ने उस बच्चें को फिर से उसी जगह पर कबाड़ा बीनते हुए देखा इन बच्चों ने उस बच्चे से बात करने कि कोशिश की लेकिन वह डरते डरते बोला की। आप मेरे से बात क्यों करना चाहते हो? बालक ने बताया कि मैं भी आप कि तरह बोतल बीनने का काम करता हूं। लेकिन मैंने देखा है। कि आप हम बच्चे से डरकर भाग जाते हो ? 14 साल का बालक अपने बारे में जिक्र करते हुये कहां कि मैं अपनी मर्जी से काम नही करता हूं हमारा एक मालिक है जो हम बच्चों से जबरदस्ती काम करवाता है उन्होने सभी बच्चों से बोल रखा है। कि अपने बारे में किसी को नही बताना है अगर कोई तुम बच्चों से बात भी करना चाहे तो भाग जाना। इसलिए मैं आप से बात नही कर रहा था। बालक ने पूछा कि आप बच्चे कहा से आए हो ? उन्होने बताया कि हम सभी बच्चे अलग अलग जगह से आए है। कुछ बच्चे बिहार नेपाल और राजस्थान से भी आये है लगभग 15 बच्चे है। हम बच्चों की उम्र 14 से 17 साल तक है। हम बच्चे घर की स्थिति खराब होने के कारण दिल्ली आ गये। पर हम सभी बच्चों को पता नही था कि हम बच्चों को ऐसी मुश्किलो से गुजरना पड़ेगा। जो हमारा मालिक है वह बुजुर्ग है वह मोहरा ऐसे ही बच्चों को बनाता है जो घर से भागकर आते और जो नशे की अंधेरी दुनियां में लिप्त होते है। उन बच्चों से अपना काम निकलवाता है। एक बच्चे ने पूछा कि आपको वह कितना पैसा देता है जिसके पास आप काम करते हो उस बच्चे ने बताया कि हम बच्चों को पैसा नही देता है सिर्फ सुबह और रात को खाना देता है। दिन में तो हम बच्चे मांगकर ही खा लेते है। लेकिन जो भी हम बच्चे पूरे दिन में पैसे मांगकर लाते है उस पैसे की शराब पी जाते है।

शरीर पर जख्म बढ़ाकर भीख मांगने पर मजबूर बच्चे

बालकनामा ब्यूरो

पुल के नीचे रहने वाले कुछ परिवार अपने बच्चे से जबरन काम करवाते है। अभी हाल ही में पता चला कि यह लोग अपने बच्चों कड़ी धूप में भीख मांगने के लिए भेजते है। जब यह बच्चे भीख मांगने से मना करते है तो इन बच्चों पर शोषण करते है। पत्रकार ऐसे बच्चे से मिला जो धुप में भीख मांग रहा था। बच्चे से बात की तो बच्चे ने बताया कि भईया हमारे माता पिता भीख मांगने के लिए भेजते है। हमारे माता पिता कुछ काम नही करते है। सिर्फ हम बच्चों से ही भीख मांगने के काम करवाते है। बच्चों ने बताया कि यह हमारा खानदानी रीति रिवाज है। जैसे कि मेरे घर में 6 भाई है उनसे भी हमारे माता पिता भीख के लिए बोलते है। इसके अलावा कोई दूसरा काम हम बच्चों को नही आता है। पत्रकार बच्चों से पूछा आप बच्चे पूरे दिन भीख मांगते हो क्या कोई व्यक्ति पैसा देते है ? बच्चों का कहना है ज्यादातर

लोग पैसे नही देते है। इसलिए हम बच्चों को कभी किसी गाड़ी से चोट लग जाती है। हांथ पैर एवं शरीर के अन्य अंगों में चोट लगने की वजह जख्म होते है तो उसे भी ठीक नही कराते है। इस जख्म को और बढ़ा देते है ताकि इस जख्म को दिखाकर लोगों से गुजारिस करे कि इस जख्म को इलाज करने के लिए पैसे की जरूरत है। पत्रकार ने एक बच्चे को देखा जिसके सर और नांक पर बहुत चोट लगा हुआ था। वह बच्चा भीख मांग रहा था। पत्रकार उस बच्चे से पूछा कि आप के सर पर चोट लगा है आप दवाई क्यो नही ली। उस बच्चे ने बताया कि अगर मैं दवाई ले लूगा तो मेरा जख्म ठीक हो जाएगा। फिर भीख कैसे मिलेगा इसलिए इलाज नही कराया और मेरे माता पिता भी इस जख्म को रोज बढ़ा देते है ताकि यह ठीक ना हो और लोगो को देखाकर ज्यादा पैसे मिल सके। बच्चों ने बताया कि हम बच्चे पूरे दिन की कमाई अपने माता पिता को देते है और वह शाम को उस पैसे से शराब पीते है। जब हम बच्चों को भूख भी लगती है तो खाना नही देते है। हम दूसरे लोगो से मांगकर खा लेते है।

मालिक के अत्याचार से बच्चे हो रहे परेशान

बालकनामा ब्यूरो

कुछ लोगो ने सरकार की जमीन पर कब्जा कर रखा है दूसरे व्यक्ति जो कामकाज करने वाले होते है उनको किराए पर रहने के लिए जमीन देते है। वह खुद जुग्गी बनाकर रहते है बदले में उनको जमीन का किराये देना पड़ता है लेकिन दुख की बात यह है कि अगर महिना पूरा होने तक किराया नही पंहुचता है तो बच्चों के माता पिता को धमकी दी जाती है। कि अपनी जुग्गी का सारा समान बाहर निकाल लो नही तो मैं खुद ही बारह फेक दूगा। स्थान का नाम गुप्त रखा गया है एक जगह ऐसी है जहां पर चार जुग्गीयां तोड़ दी गई है। क्योंकि उस जुग्गी में रहने वाले परिवार गुब्बारे बेचने का काम करते थे। हर बार माह पूरा होने से पहले ही किराया पंहुचा दिया जाता था लेकिन एक महिना का किराया देने में सिर्फ दस दिन देर हो गई थी। इसलिए उस जुग्गी के मालिक ने सारा समान बाहर फेक दिया और जुग्गी भी तोड़ दी। इसी वजह से इन बच्चों को मुश्किलो से गुजरना पड़ रहा है। उस बच्चे के सभी परिवार के सदस्यों को टूटी जुग्गी के बाहर रहना पड़ता है जब तक वह बकाया राशि पूरा नही कर देता है तब तक उस जुग्गी में प्रवेश नही कर सकते है। दूसरी ओर बच्चों का कहना है कि हमारे जुग्गी के मालिक का आत्याचार बढ़ता ही जा रहा है चार साल पहले पांच सौ रुपए किराया लेता था फिर धीरे धीरे सात सौ किराया बढ़ा दिया। वर्तमान में एक हजार रुपए लेता है। हमारे माता पिता ने जुग्गी के मालिक से बात की। आप इतने पैसे क्यों बढ़ाते जा रहे हो ? उन्होने बोला कि रहना है तो रहो नही तो जैसे लोग पुल के नींचे रहते है तुम भी ऐसे रहना शूरू कर दो। वहां पर पैसे नही देना पड़ेगा। 14 वर्षीय बालिका ने अपने माता पिता को समझया कि यहां से किसी दूसरे स्थान पर चले जाते है वही पर एक नया जुग्गी किराए पर ढून लेगे। लेकिन इनके माता पिता बोलते है कि अगर हमलोग यहां से चले गए तो हमारा काम कैसे चलेगा यहां तो एक हजार रुपए देने पड़ते है दूसरी स्थान पर इसे भी ज्यादा किराया होगा तो वहां से हम कहां जायेगे। बच्चे अपने माता पिता कि इस बात को सुनकर खामोस रह गए।

आखिर कब तक जाएं जंगल?

बातूनी रिपोर्टर काजल रिपोर्टर चेतन

हमारे दिल्ली सरकार ने यह घोषणा तो कर दी है कि अब लोग किसी भी शौचलय का एक रुपए में इस्तेमाल कर सकते है पर कुछ जगह ऐसे भी है जहां पर अभी भी शौचलय से संबंधि मारपीट होती रहती है। रामपुरा अशोका पार्क गोल्डन बस्ती इस जगह पर एक ही शौचलाय है लेकिन इस शौचलय का इस्तेमाल करने वाले लोग की जनसंख्या लगभग दो हजार से भी अधिक है सुबह होते ही लोग लाईन में खड़े.हो जाते है। बड़े मुश्किल से पांच लोग इस शौचलय का प्रयोग कर पाते है क्योंकि यह इतना गंदा है। देखकर उलटीया आने लगते है। इसलिए वहां पर रहने वाले सभी बच्चे इधर ऊधर भटकते रहते है। अशोका पार्क के पास एक बहुत बड़ा जंगल है उस में कुछ बच्चे शौच करने के लिए जाते है कुछ लड़कियां मेट्रो स्टेशन के शौचलाय में शौच करने के लिए जाती थी पर वहां पर कार्य करने वाले कार्यकर्ता इन लड़कियों से तीस रुपए लेते थे। इसलिए लड़कियो ने वहां पर जाना बंद कर दिया और वह भी जंगल में शौच करने के लिए जाने लगी। पत्रकार द्वारा जानकारी प्राप्त हुई कि जो लड़कियां शौच करने के लिए जंगल में जाती है उन्हे भी बहुत तकलीफ होती है। क्योंकि जंगल बहुत घणा हुआ है अगर इन लड़कियों को कोई व्यक्ति शौच करते देख लेते है तो पीछे पड़ जाते है। अश्लील बाते बोलते रहते है। इसलिए यह लड़कियां चाहती है कि जिस तरह दिल्ली सरकार ने यह घोषणा कर दिया है। ऐसे ही हम बच्चों के लिए 5 शौचलय एक स्थान पर बना दिया जाए ताकि हम बच्चों को इधर ऊधर भटकना ना पडे।

माता की मृत्यु होने के बाद सलमान पर हुआ अत्याचार

बातूनी रिपोर्टर सलमान रिपोर्टर दिपक

सात साल का सलमान अपने परिवार के साथ हंसी खुशी जीवन गुजार रहा था लेकिन सलामन को क्या पता था कि उसके भी बुरे दिन आने वाले है। छोटी सी ही उम्र में माता कि मृत्यु हो गई जिसकी वजह से सलमान के पिता ने दूसरी शादी करके अपने परिवार से अलग घर बसा लिया सलमान अकेला हो गया सिर्फ दादी के साथ रहने लगा। कुछ दिनों के बाद सलमान की दादी को किसी काम से गांव जाना पड़ा और सलमान को दिल्ली में किसी पड़ोसी के पास छोड़ दिया था। जिस जगह सलमान रह रहा है वहां निटक में ही रेलवे स्टेशन है। जहां हमेशा रेलगाड़ी आती जाती रहती है। वहां पर कुछ बच्चे हर वक्त खेलते रहते है। एक दिन सलमान भी खेल रहा था और खेलते वक्त गेंद रेलगाड़ी की पट्री के पास चला गया। जब सलमान गेंद लेने के लिए वहां पंहुचा और रेलगाड़ी चक्के पास हांथ डालकर गेंद निकालने कि कोशिश की लेकिन गेंद तक हांथ नही पंहुचा। फिर सलमान ने अपना पैर से गेंद निकलने कोशिश करने लगा। तभी आचानक से रेलगाड़ी चलने लगी। एक पैर पर रेलगाड़ी चक्का चढ़

गया जिसकी वजह से सलमान की पैर थोरा सा कट गया। यह देखते हुए लोगो ने सफदजंग अस्पताल में लेकर गए वहां 15 दिन तक इलाज चला और डांक्टर ने सलाह दी की सलमान के पैर लोहे से कटा है इसलिए डर है कि कही शरीर में इंफैक्शन नही फेल जाएगे इसी वजह डांक्टर ने बोला कि थोरी सी और पैर को काटना पड़ेगा। जब यह बात सलमान की दादी को पता चला तो गांव से दौड़ती हुई आई पर पिता को इस बात का पता चला फिर भी वह सलमान को देखने तक नही आए। जब से सलमान के साथ ऐसा घटना हुआ। तब से अकेला चल भी नही पता है इसलिए दादी अस्पताल व सरकारी दफतर की चक्कर काट रही है। ताकि विकलांग किर्सी मिल जाएगे। जिससे सलमान को चलने फिरने असानी हो पर ऐसा नही हो रहा है। जब भी सलमान को शौचलय व कही जाना होता है तो दादी गोद में उठाकर ले जाती है। इसलिए सलामन चाहता है कि उसको किर्सी मिल जाए ताकि वह उस किर्सी के सहारे अपने से चल फिर सके।

बड़े लड़के की वजह से छोटे मासूम बच्चों पर पड़ी गलत संगत

बालकनामा ब्यूरो

पत्रकार सपोर्ट ग्रुप मींटिग की मीटिंग के दौरान बच्चों ने अपनी समस्या को रखते हुए कहा कि छोटे छोटे बच्चे बुरी संगत की ओर बढ़ते है रहे है। इसकी वजह है बड़े लड़के और लड़कियां

क्योंकि यह बड़े बच्चे भी हमारे महेले में रहते है और बड़े बच्चे प्यार मोहब्बत की ओर बढ़ते ही जा रहे है। बच्चों ने बताया कि खुलेआम हम बच्चों के शामने लड़की के साथ घूमते है। उस लड़की साथ गलत भी करते रहे है। हम बच्चे में से कुछ बच्चे ऐसे है जो इस बर्तव आयदिन देख रहे है। इसी वजह से छोटे बच्चे भी अपना पढ़ाई लिखाई छोड़कर अपना ध्यान प्यार मोहब्बत की ओर बढ़ाने लगे है। जैसे बड़े लड़के किसी लड़की से प्यार करते है अगर वह लड़की प्यार करने से इंकार करते है। उसी वक्त लड़के अपना हांथ काट लेता है और उस लड़की की नाम अपने हांथ पर ब्लेड से लिखते है। यह बात सुनते ही पत्रकार ने कुछ ऐसे लड़कियां से मिली जो इस शिकंजे में उलझ रही है। 15 वर्षीय बालिका ने बताया कि अगर हम लड़कियां किसी लड़के को प्यार करने से मना करते है। वह बोलते है मेरे से प्यार नही करोगी तो मैं अपनी हांथ काटकर जान दे दूगा। इसकी वजह तुम होगी। और बोलते है कि मैं तुम्हारे माता पिता को बोल दूगा कि आपके बेटी के साथ मेरा पहले से ही संबंध है। इसलिए हम लड़किया इन लड़के के बातो में आ जाते है। और हम लड़कियों के साथ गलत भी कर देते है इसलिए हम लड़कियां चाहते है कि इस परेशानी से जल्द से जल्द मुक्त मिले।

स्कूल के अंदर भी नशीले पदार्थ का सेवन

बालकनामा ब्यूरो

पत्रकार सरकारी स्कूल जाने वाले बच्चों के साथ सपोर्ट ग्रुप मीटिंग किया मीटिंग के दौरान बच्चों ने अपनी स्कूल की परेशानी रखते हुए बताया कि भईया हमारे स्कूल के वातावरण ठीक नही है। अभी हालेही में एक घटना घट चुकी है। 10 साल की बच्ची को जरबदस्ती नशा करवाते थे। जिसकी वजह से उस बच्ची की तबीयत दिन पर दिन खराब होती जा रही थी। हम बच्चों ने भी देखा था कि वह बहुत कमजोर होती जा रही थी। हम बच्चे उस बच्ची से बात भी करना चाहे। तो वह सही से बात नही कर पाती थी। हमेशा उदास रहती थी उसके माता पिता ने भी उसे पूछा था कि तुम्हे कोई परेशानी है तो उसने कुछ जवाब नही दिया था। कुछ दिनों के बाद अचानक उसी तबीयत बहुत खराब हो गई और उसे अस्पताल में ले जाया गया डांक्टर द्वारा जानकारी मिली कि यह बच्ची नशा करती थी इसलिए बीमार हो गई है डांक्टर ने अस्पताल में एडमीड कर लिया और दो दिन बाद उस बच्ची की मृत्यू हो गई। कुछ बच्चों के कहना है कि स्कूल में ही चोरी छूपके नशा लाया जाता है और बच्चों से जबरदस्ती नशा कराया जाता है। पत्रकार बच्चे से पूछा कि आप लोग क्या चाहते हो ? 12 वर्षीय बालिका ने बताया कि भईया हम सभी बच्चे चाहते है कि हमारे स्कूल सिक्योरिटी गार्ड होना चाहिए ताकि जो भी बच्चे पढ़ाई करने के लिए आते है। उसको तलासी लिया जाये। और हमारी अध्यापक को भी सतर्क होना चाहिए ताकि हमारे स्कूल के अंदर कुछ गलत न हो और बच्चे गलत संगत में न पड़े सके। अगर स्कूलों में भी यह सब होने लगा तो कोई बच्चा स्कूल में पढ़ने के लिए नहीं जाएगा।

मच्छर से बचने के लिए फटे पुराने वस्त्र जला रहे हैं बच्चे

बातूनी रिपोर्टर रूस्तम रिपोर्टर ज्योति

पत्रकार दिल्ली में दौरा किया तो पता चला सड़क एवं कामकाजी बच्चों को मच्छर बहुत परेशान कर रहे है इस उदश्य को लेकर पत्रकार बच्चों के साथ बात चीत की 15 वर्षीय राहुल ने बताया कि हम बच्चे ज्यादातर पुल और खुले आसमान के नीचे सोते है। और शाम पड़ते ही मच्छर काटने लगते है। 14 साल की प्रियंका का कहना है कि हम बच्चों के पास इतना पैसा नही है कि हम बच्चे एक अच्छे जगह पर कमरा लेकर रह सके। जहां पर हम बच्चे रहते है वहां आस पास बहुत गंदी पड़ी रहती है। कुछ महिने पहले हमारे दिल्ली सरकार ने मच्छर से बचने के लिए मच्छर मारने वाली दबाई पूरे दिल्ली में छिड़काई गई थी। जिससे बहुत सारे मच्छर कम हो गये थे। लेकिन अभी जैसे जैसे गर्मी बढ़ते ही जा रही है वैसे ही मोसम के अनुसार मच्छर भी बढ़ते ही जा रहे है। बच्चों ने बताया कि ये मच्छर लाल रंग के होते है काटने पर हमारे शरीर में सुजन और खुजली होने लगती है। 15 साल की सपना ने बताया कि जब हम बच्चे कबाड़ा बीनने के लिए जाते है तो जो भी फटे पुराने वस्त्र कूडेद्रान में मिलते है। उसको हम बच्चे सोते समय जलाते है। जब तक वह वस्त्र जलते है तब तक तो मच्छर नही काटते है। लेकिन गंदी बदवू आती है। जिससे हम बच्चों के नांक में बहुत तेज दर्द होते है और कभी कभी तो उल्टीयां भी आ जाती है। 16 वर्षीय राकेश का कहना है जैसे पहले दिल्ली सरकार ने मच्छर से बचने के लिए दबाई को छिड़काया था वैसे ही दोबारा छिड़काना चाहिए। ताकि हम बच्चे मच्छर से सुरक्षित रहे और बिमारीयों का शिकार ना हो।

क्या आप एक रुपए खर्च नही कर सकते ?

बालकनामा ब्यूरो

पत्रकार लाजपत नगर में काम करने वाले सड़क एवं कामकाजी बच्चों के बातचीत करके उनकी समस्याओं के बारे में जाना बच्चों ने पत्रकार को बताया कि लाजपत नगर मार्केट में हम बच्चे कबाड़ा चुनते है हम कार पार्किंग के आस पास सारे दिन चुनते है जब हम कबाड़ा चुनकर इकट्ठा कर लेते है तो हम कबाड़े में से खाली बोलतों की छटाई बीनाई करते है और उसी जगह पर हम अपना खाना पीना भी खाते हैं। 15 बालक ने बताया कि जब हम बच्चे वहां बैठकर खाना खाते हैं तो उस जगह बहुत गंदी बदबू आती हैइस बदबू के कारण कई बार हम बच्चों को उल्टी भी हो जाती है बच्चों ने बताया कि जो लोग मार्केट में होते है वह सभी बाहर खुले में ही मूत्र करते

है जिससे वह जगह भी गंदी व बदबूदार हो जाती है यह सुनकर पत्रकार बच्चों से कहां कि लाजपत नगर मार्केट के अंदर शौचालय बना हुआ है लोग उसे इस्तेमाल क्यों नही करते है? उन्होने बच्चों को जानकारी देते हुए कहां कि इसलिए तो हर जगह शौचालय बनाए जाते है ताकि लोग आस पास की जगह को गंदा न करे। यह बात सुनकर 15 साल की बालिका ने बताया कि इस मार्केट के अंदर शौचलय है पर उसमें जाने के लिए कुछ पैसे देने पड़ते है इसलिए लोग पैसों की लालच की वजह से बाहर खुले में ही मुत्र करते है और अगर हम बच्चे उसे मना करते है और कहते है कि यहां पर शौच क्यों कर रहो हो तो वह हमारी ओर घूमकर मुत्र करने लगते है यहां तक की इस मार्केट में कार्य करने वाले कर्मचारी गार्ड या कार ड्राईवर भी यही पर आकर मूत्र करते है इस वजह से हम बच्चों को बहुत परेशानी होती है क्योंकि हम बच्चे भी इसी मार्केट में काम करते है उसी एक जगह पर उठने बैठने का ठिकाना बना हुआ है इसलिए जब भी हम बच्चे खाना खाते है तो रोज इस बदबू का सामना करना पड़ता है कभीकभी हम बच्चे वहां पर बैठकर खाना नही खाते लेकिन हम रोज रोज तो अलग जगह जाकर खाना नही खा सकते। हम बच्चे अपनी जगह जाकर काम तो करेंगे ही। हम बच्चे आप सभी से यह अपील करते है कि आप खुले में शौच न करे और शौचालय का इस्तेमाल करें क्योंकि अब तो दिल्ली सरकार ने यह घोषणा कर दी है कि अब लोग एक रूपया देकर किसी भी शौचालय का इस्तेमाल कर सकते है। फिर भी लोग खुले में शौच करना चाहते है।

झूठे वादे करके बच्चे हुए बेघर

बालकनामा ब्यूरो

आपलोगो से यह बताते हुए बहुत दुख हो रहा है कि जिसे आप करोल बाग मार्किट के रूप में देख रहे है वहां पर पहले हजारो जुग्गीयां हुआ करती थी और उसमें छोटे छोटे बच्चे अपने परिवार के साथ रहते थे साथ ही पढ़ाई लिखाई भी करते थे। समय के अनुसार कुछ बड़े लोगो ने पैसो की लालच देकर उनकी जुग्गीयां खरीदने लगे और धीरे धीरे सारे जुग्गीयां खरीद ली गई। इन बच्चों के माता पिता से पहले जो लोग जुग्गीयां खरीदने के लिए आये थे। उन्होने वादा किया था कि इन लोगो को जमीन भी दिलाई जायेगी। पर ऐसा कुछ नही हुआ। जो बच्चे अपने परिवार के साथ हंसी खुशी जिदंगी गुजार रहे थे वह भी सड़क पर आ गए है। अब यह लोग पूरे दिन इसी मार्किट में फेरी करते है। जिससे इनका गुजारा होता है। भूतकाल में बहुत बच्चे पढ़ाई भी करते थे लेकिन वर्तमान में एक भी बच्चे पढ़ाई नही करते है। इन बच्चों को पता नही है कि पढ़ाई क्या होती है। यह बच्चे पढ़े लिखे लोग से नफरत करते है। क्योंकि जिन्होने भी इनकी जुग्गीयां खरीदी थी वह पढ़े लिखे थे। इनके माता पिता से बोला था कि आपके बच्चों को स्कूल में दाखिला दिलाया जायेगा और रहने के लिए अच्छा घर भी मिलेगा। अब यह बच्चे किसी से बात नही करना चाहते।

पत्रकार इन बच्चों से बहुत मुश्किल से बात की तो बच्चों ने खुलकर अपनी बात रखी और बताया कि भईया अभी भी वहलोग परेशान करते है हम बच्चों को भगाने के लिए गुन्डे भेजते है ताकि हम बच्चे इस मार्किट से कही और जगह पर चले जाए। लेकिन हम बच्चे इस जगह से कही दूसरी जगह पर नही जाना चाहते है क्योंकि हमने अपना बचपन यही पर सम्भाला है।

कौन करेगा प्रदीप का अधुरा सपना पूरा (क्या आप)

बातूनी रिपोर्टर प्रदीप रिपोर्टर दिपक

9 वर्षीय प्रदीप अभी भी पढ़ाई का ज्जवा लेकर जी रहा है दो साल पहले प्रदीप की माता थी तो वे स्कूल छोड़ने के लिए जाती थी लेकिन दुख की बात यह है कि प्रदीप की माता बिमारी की शिकार हो गई और कुछ दिन तक प्रदीप घर में रहा। फिर उसको दादी कुछ महिनों तक स्कूल छोड़ने जानी लगी। लेकिन उम्र की वजह से प्रदीप की दादी की मृत्यु हो गई।

वर्तमान में प्रदीप एक चैमीन की दुकान पर काम करता है जिससे इसको एक हजार रुपए मिलता है। पत्रकार प्रदीप से पूछा कि आप अकेले स्कूल क्यों नही जाते थे ? प्रदीप ने बताया कि भईया मैं महात्मा गांधी पंजाबी बाग में रहता हूं। वहा से मेरा स्कूल लगभन तीन किलो मीटर दूर है और रास्ते में रिंग रोड भी पड़ता है उस रिंगरोड को पार

करने में हम बच्चों को बहुत मुश्किल होती है। क्योंकि वाहन बहुत तेजी से निकलती है। वहा पर कोई लालवत्ती भी नही है इसलिए मैं अपने माता के साथ जाता था।

जब से मेरे माता और दादी की मृत्यु हुई कोई मुझे छोड़ने के लिए नही जाता है पिता है पर वह घर में शराब के नशे में लिप्त रहते है। उन्हे हम बच्चों से कोई मतलब नही होता है जब से माताजी की मृत्यु हुई तब से घर का सारा बोझ मेरे ऊपर आ गया है। लेकिन मैं यह नही चाहता हूं। जिस तरह मैंने अपना स्कूल छोड़ दिया और एक दुकान पर काम कर रहा हूं। इसी तरह मेरे भाई बहन भी किसी दुकान पर काम ना कड़े। इसलिए मैं खुद अपने भाई बहन को स्कूल छोड़कर आता हूं। मैं अभी भी पढ़ाई करना चाहता हूं। मेरा बचपन से सपना है कि स्कूल में ही पढ़ाई करू और बड़े होकर एक अच्छा कंम्पनी में कार्य करू पर लगता है यह सपना अधुरा ही रह जायेगा।

पायल बनाने का काम करने वाले बच्चे भी जाना चाहते हैं स्कूल

बातूनी रिपोर्टर फरीन रिपोर्टर पूनम

आगरा कैंट में पत्रकार दौरा किया तो पता चला कि वर्तमान में बच्चे अलग अलग प्रकार के कामो में शामिल हो रहे है। एक तरफ देखा कि लगभग 12 से 14 लड़कियां पूरे दिन पायल पर डिजाईन बनाने का कार्य करती है और दूसरे ओर जूतो पर धागे से डिजाईन करती है। पत्रकार इन बच्चों से पूछा कि आप बच्चे यह काम क्यों करते हो ? 15 वर्षीय बालिका ने बताया कि हमारे परिवार सभी लोग यही काम करते है अगर हम बच्चे यह काम नही करेगे तो हमारा घर का खर्चा नही चलेगा। बच्चों का कहना है कि 12 पीस पायल पर डिजाईन करते है तब जाकर हम बच्चों को 50 पैसा मिलता है। इसलिए हमारे माता पिता भी हम बच्चों के साथ मदद करते है ताकि ज्यादा से ज्यादा डिजाईन कर सके। दूसरी ओर लड़कियों ने बताया कि जब हम बच्चे जूतो पर डिजाईन करते है तो हाथों में बहुत तेज दर्द होता है 6 से सात घंटे काम करते है तो आंखो में दर्द होता है। क्योंकि सूई

धागे से हम बच्चे जूतो पर डिजाईन करते है। लेकिन इन बच्चों में भी पढ़ाई की लालशा पनप रही है। 15 साल की बालिका ने बताया कि मुझे इन सब कामों में संतुस्टि नही मिलती है। मेरा मन है कि जैसे दूसरे बच्चे पढ़ाई करने के लिए स्कूल जाते है वैसे मैं भी जाऊ लेकिन परिवारिक स्थिती खराब होने के काराण मैं स्कूल नही जा पा रही हूं। हम बच्चे यही चाहते है कि हमारे माता पिता को कही ना कही काम मिल जाए ताकि हम बच्चों को काम ना करना पड़े।

बच्चों के खेलने का पार्क बना शमशान

बालकनामा ब्यूरो

पत्रकार सांसी कैम्प में रहने वाले बच्चों के साथ सपोर्ट ग्रूप मींटिग की मींटिग के दौरान बच्चों ने अपनी समसया को बताते हुये कहां कि भईया हम बच्चों को यह परेशानी है हमारे जुग्गी के आस पास कही खेलने का जगह नही है। एक तरफ शमशान घाट है जहां लहासो को दफनाया जाता है दूसरी ओर रेलगाड़ी पट्रीयां जहां तेज रफ्तार से रेलगाड़ी निकलती है।

यहां हम बच्चों को हर वक्त डर लगा रहता है कि कही बच्चों के साथ दूघर्टना नही हो जाये। 15 वर्षीय बालक ने बताया कि दो साल पहले हम बच्चों के लिए एक बहुत अच्छा पार्क था अब उस पार्क को शमशान घाट के रूप में बदल दिया गया है शमशान घाट की ओर थोड़ी जगह बची हुई है तो हमारे माता पिता उस थोड़ी जगह पर खेलने के लिए नही जाने देते है। हम में से कुछ बच्चे उस शमशाम घाट में चोरी छूपके खेलने के लिए जाते है तो रात को डराबने डराबने सपन आते है।

16 साल के बालक ने बताया कि हम बच्चे एक डर का खोप जी रहे है। हम बच्चे शाम होते ही अपने अपने जुग्गी के अंदर चले जाते है। बालक ने बताया भईया हम सभी बच्चों को पता है कि हमारे खेलने का अधिकार है अगर हम बच्चे नही खेलगे तो हमारा शरीर का विकास कैसे होगा ? यह हमारे अधिकरो का हनन हो रहा है।

साथ ही बच्चों ने दूसरे पार्क का जिक्र करते हुए कहां कि हमारे जुग्गी से पांच किलो मीटर दूर एक पार्क है उस पार्क में हम बच्चे खेलने जाते है तो पार्क की देखरेख करने वाले गार्ड अकंलजी मारते है वह बोलते है कि यह पार्क तुम बच्चे के लिए नही है इस पार्क में बड़े लोग आते है। इसलिए हम बच्चे चाहते है कि जैसे पहले पार्क था वैसे ही हमारे जुग्गी के पास एक पार्क बना दिया जाए ताकि हम बच्चे सुरिक्षत से खेल पाय।

स्कूल जाने की उम्मीद लगाए बैठे हैं रबीना के भाई बहन

बातूनी रिपोर्टर रबीना रिपोर्टर दिपक

आठ वर्षीय रबीना अपने परिवार के साथ शकूर बस्ती में रहती है। रबीना 6 भाई बहन है पिता मजदूर का काम करते है माता अपने घर में ही काम करती है। रबीना के घर में कोई भी भाई बहन स्कूल नही जाता है। बड़े से छोटे सभी कामों में लिप्त रहते है। रबीना पत्रकार के शामने अपने बात रखते हुए कहां कि हम बच्चे अपने पिताजी से बहुत परेशान है। क्योंकि जब वह अपने काम पर से शराब पीकर लौटते है तो हम भाई बहन से गाली गलौज और गंदी गंदी बाते बोलते है। कभी कभी तो मम्मी को भी पीटाई कर देते है। इसलिए हम बच्चे चाहते है कि हमारे पिता शराब नही पीये। घर में खुशी से रहे पर ऐसा नही होता है। जिसके साथ मेरे पिता काम करने के लिए जाते है वहलोग भी शराब पीते है इसी वजह से मेरे पिता भी शराब के बुरी लथ में लिप्त हो गए है नही तो पहले बहुत अच्छे थे। हमारे सभी भाई बहन से बहुत प्यार से बात करते थे हमारी परेशानीयों को सुनते थे। यह परेशानियों को देखते हुए भी हम भाई बहन के मन में पढ़ाई की लालशा पनप रही है हम भाई बहन का मन होता है कि दूसरे बच्चों की तरह स्कूल जाऊं। लेकिन परिवारीक स्थिती ठीक न होने की वजह से स्कूल जाने का सपना लगता है कभी पूरा नही हो सकता।

बड़े लड़के अंडर पास की लाईट तोड़कर करते है छेड़छाड़

बालकनामा ब्यूरो

बारह पुल्ले और सराय काले खां के बीच एक अंडर पास बेसमेंट बना है इस अंडर पास बेसमेंट में से हजारो लोग व बच्चे आते जाते है। क्योंकि एक तरफ मार्किट लगती है दूसरी तरफ लोग रहते है। अगर कभी भी किसी व्यक्ति व बच्चे को मार्किट या किसी चीज के लिए बाहर जाना पड़ता है। तो वह इसी अंडर पास बेसमेंट से गुजकर निकलते है। लेकिन रात को इस अंडर पास बेसमेंट से होकर गुजरना बहुत मुश्किल होता है। इस अंडर पास बेसमेंट में लाईट नही लगी हुई है। जब पत्रकार ने इसी बात को लेकर छानवीन की तो पता चला। इस अंडर पास बेसमेंट में जब भी एमण्सीण्डी के कार्यकर्ता लाईट लगाते है। तो कुछ बड़े लड़के गुन्डा गर्दी करके लाईट तोड़ देते है। 15 वर्षीय बालिका ने बताया कि ये बड़े लड़के लाईट इसलिए तौड़ते है। ताकि हम लड़कियों को परेशान कर सके। क्योंकि इसी अंडर पास बेसमेंट से होकर कुछ कबाड़ा बीनकर अपनी घर लौटती है और कुछ लड़कियां काम पर से आने के बाद रात को मार्किट सब्जि खरीदने के लिए जाती है और इस अंडर पास बेसमेंट में रात को काफी अंधेरा होता है इसी अंधेरे में छूपकर बड़े लड़के लड़कियों को पेरशान करते है 16 वर्षीय बालिका ने बताया कि मेरी मम्मी कोठी में काम करने के लिए जाती है। और रात 10 बजे तक काम पर से लौटती है एक रात मैं भी अपनी मम्मी की साथ थी तो एक लड़का अधेरे में मेरा हांथ पकड़ लिया गलत जगहो पर हांथ लगाने लगा। तभी हमलोग वहां से भागे। इस जगह पर कामकाज करने वाली लड़कियों का यही कहना है कि अंडर पास बेसमेंट को देखरेख करने के लिए सिक्योरिटी गार्ड रखना चाहिए ताकि इस अंडर पास बेसमेंट की कोई लाईट नही थोड़ सके। तभी हमलोग सुरक्षित रह सकते है।

समंथ की उड़ान पढ़ाई की ओर

बातूनी रिपोर्टर समंथ रिपोर्टर शम्भू

यह खबर 15 वर्षीय समंथ की है समंथ अपने माता पिता के साथ पेटी मार्किट में रहता है उसकी माता कोठि में काम करने के लिए जाती है पिता बैंग व पेजामे में चेन लगाने का काम करता है और समंथ भी इसी तरह बचपन से ही अपने पिता को काम करते देखा है। उसके माता पिता ने कभी पढ़ाई नही की। इसलिए समंथ को भी इसके माता पिता ने पढाऩा नही चाहा वह सोचते है कि आजकल गरीब के बच्चे पढ़ाई भी करते है। पर वह अपने जींवन में कामयाब नही हो पाते है। इसलिए जैसा काम पिता करता है वैसे ही काम बेटा करता है। समंथ वर्तमान में गली महल्लो में घूम घूमकर पूरे दिन चेन लगा लो चेन लगा लो बोलकर चेन लगाता है। कभी कभी स्टेशन पर भी रेलगाड़ी में चढ़कर बैंग में चेन लगाता है समंथ ने देखा कि एक संस्था के कार्यकर्ता कुछ स्टेशन पर रहने वाले बच्चों को पढ़ाई करा रहे है उस दिन से समंथ भी पढ़ाई करने लगा और समंथ ने अपने मन में ठान लिया है। अब मैं अपने माता पिता को पढ़ाई करके दिखाऊगा और माता पिता से झूठ बोल कर पिछले दो महिने से पढ़ाई करने के लिए आता है समंथ चाहता है कि मैं पढ़ाई करके एक अच्छा बच्चा बनू ताकि मेरे पिता को लगे गरीब का भी बच्चा पढ़ाई करके अपने जींवन में कामयाब हो सकता है। समंथ ने बताया कि मैं उन सभी कामकाज करने वाले बच्चों के लिए संदेश दे रहा हूं जिन बच्चे के माता पिता पढाई करने से मना करते है उनके खिलाफ ऐसे ही आवाज़ उठाना चाहिए नही तो कोई भी बच्चा पढ़ाई नही कर पाऐगा।

वातावरण देखकर बच्चों पर हो रहे हैं जुल्म

बातूनी रिपोर्टर बाबू रिपोर्टर चेतन

यह खबर 10 साल बाबू की है बाबू के घर की आर्थिक स्थिती खराब होने के कारण नारायणा गांव रेलवे स्टेशन पर चैमीन और मोमोस की दुकान पर काम करने लगा। पत्रकार द्वारा यह बात पता चली कि इसके पिता विक्लांग है और माता के भी पैरो में तकलीफ इसकी वजह से कोई भी काम नही कर सकते है। घर में दो बड़े भाई है वह अपने माता पिता से कोई मतलव नही रखते दिनभर इधर ऊधर घूमते रहते है। इसलिए बाबू ने काम करना शूरू कर दिया। जब रोज सुबह स्टेशन पर बाबू झूठी प्लेटे धो रहा होता था तो उसके पास से इसके दोस्त स्कूल जा रहे थे और बाबू का मजाक उड़ाते थे यह देखते हुए बाबू ने निर्णय लिया कि मैं भी इनके तरह स्कूल जाऊगा। 15 दिन के बाद खुद की कमाए हुए पैसो से कोचिंग सेंटर में दाखिला लिया। और मन लगाकर पढ़ाई करने लगा पढ़ाई में रूची देखते हुए कोचिंग सेंटर की अध्यापकजी ने सलाह दी आप भी सरकारी स्कूल में दाखिला करवा लो। इससे तुम्हे प्रमानपत्र भी मिल जाएगा। अध्यापकजी की बात सुनकर बाबू अपने माता के साथ सरकारी स्कूल पहुंचा और तीसरी कक्षा में दाखिला करवाया। वर्तमान में बाबू काम के साथ साथ पढ़ाई करता है। एक दिन बाबू के दोस्त क्षमा मांगने के लिए आए कि मैं हमेशा तुमको गलत बोलता था। इसके लिए क्षमा चाहता हूं। बाबू ने हंसते हुए कहां क्षमा किस बात पे मांग रहे हो ? अगर उस दिन आपलोग ने मेरे काम को देखकर मुझे बुरा नही बोला होता। तो शायद मैं कभी स्कूल जा नही पाता। शुक्ररगुजार तो आपको करना चाहिए आपके वजह से मुझे एक नई जिदंगी मिली है।

बातूनी रिपोर्टर आफताव रिपोर्टर चेतन

एक परिवार हंसी खुशी जिंदगी गुजार रहा था। लेकिन दुख की बात यह है कि इस परिवार में एक भी बच्चे नही थे। इसलिए यह हमेशा उदास रहते थे। कुछ सालो बाद यह परिवार कही बाहर जा रहे थे। तभी इनको रास्ते में एक तीन साल के बच्चे की ओर नजर पड़ी। वह बच्चा बहुत रो रहा था। आस पास कोई भी व्यक्ति नजर नही आ रहा था उसी वक्त इनलोगो ने सोचा की हमारे घर में एक भी बच्चा नही है। शायद भगवान ने हमारे लिए ही इस बच्चे को भेजा है। यह सोचकर उस बच्चे को वहां से उठाकर लाया गया। वक्त के अनुसार वह बच्चा बड़ा होता गया। जब वह पांच साल का हुआ तो इस बच्चे को तीसरी कक्षा में दाखिला दिलाया गया। और यह बच्चा मन लगाकर पढ़ाई करता रहा। जब इस बच्चे को पांचवी कक्षा में प्रवेश करने का समय आया तो इस पर मुसिब्बत ही छा गई। बच्चे ने बताया कि हमारा परिवार कमला नेहरू कैंम्प में रहता है और यहां पर रहने वाले कूछ लोग अपने बच्चों को कूडा कबाड़ा बीनने के लिए भेजते है। इनही लोगो को देखकर मेरे जो नकली माता पिता है। उन्होने मेरा स्कूल से नाम कटवा दिया है। और कूड़ा कबाड़ा बीनने के लिए भेजते है। जब मैं कूड़ा कबाड़ा बीनने से मना करता हूं तो बहुत मारने पीटने लगते है और बोलते है कि बचपन से जो हमने पालन पोषण किया है उसका पैसा कौन चुकायेगा। पहले अपने साथ ही खाना खिलाते थे लेकिन अब तो मुझे घर के बाहर आंगन में खाना खाने के लिए देते है। वर्तमान में यह बच्चा अपने माता पिता के आत्याचार की वजह से घर छोड़कर भाग गया है और चाल्ड हेल्प लाईन कार्यकर्ता इस केश को देखरेख कर रही है।

सड़क एवं कामकाजी बच्चों की बात रखते हुए बालकनामा टीम

रिपोर्टर शम्भू

बदले हुए भारत में मीडिया की क्या भूमिका होती है। इस कार्यक्रम में स्पेशल बालकनामा टीम को सम्मानित किया गया। साथ में अलग अलग अखबार के एडिटर्स भी इस कार्यक्रम में शामिल हुए। श्री विनोद दुआ सिद्धार्थ शर्मा विनोद शर्मा जय शंकर गुप्त और आये हुए सभी विद्यथीर्यों को बालकनामा की सलाहकार शन्नो जी ने अखबार की जानकारी देते हुए कहा कि वर्तमान में सड़क एवं कामकाजी बच्चों की दशा किया है। उन बच्चों से पब्लिक किस तरह से व्यवहार करती है सड़क पर रहने वाले बच्चों को पब्लिक गलत नजरिये से देखते है उन्हे हमारे समाज का सदस्य नही मानते है। मैं यही चाहती हूं कि जो भी सड़क एवं कामकाजी बच्चे है उन से इस तरह का व्यवहार नही किया जाए और उन बच्चों को आगे बढ़ने के लिए मदद करे। ताकि एक समय ऐसा आये कि सड़क पर एक भी बच्चा नही दिखाई दे। जो हम बालकनामा अखबार में बच्चों

की खबर छापते है अगर सड़क पर कोई भी बच्चा नही दिखेगा तो बालकनामा निकालने की जरूरत ही नही पड़ेगी। बालकनामा के संपादक शम्भू अपने अखबार के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि सन् 2003 में बालकनामा अखबार का प्रकाशित किया था तब से 63 अंक प्रकाशित हो चुके है। सन् 2014 से अंग्रेजी में सेम ट्रांसलेट करने की शुरूआत कि थी संपादक ने बताया बालकनामा अखबार को किस प्रकार चलाया जा रहा है।

l एक्शन प्लान बनाया जाता है।

l फील्ड में बच्चों के साथ सपोर्टर ग्रुप मीटिंग की जाती है।

l बातूनी रिपोर्टर हमे खबरो को देते है।

l एडिटोरियल मीटिग की जाती है।

इस प्रकार से अखबार निकलता है। और निकलने के बाद सबसे पहले बच्चों को अखबार दिया जाता है ताकि उन बच्चों को लगे कि कोई तो है जो हमारी परेशानियों को सुन रहा है और लोगो तक पहुंचा रहा है। बढ़ते कदम की राष्ट्रीय सचिव ज्योति ने अपने बारे में जिक्र करते हुए कहां कि मैं भी कुछ सालो पहले रेलवे स्टेशन पर कबाड़ा बीनती थी नशा करती थी। अब मैंने यह सब छोड़ दिया है और फिर बताया कि अब मैं दस हजार सड़क एवं कामकाजी बच्चों के लिए काम करती हूं। उनकी परेशानियों की सरकारी या गैर सरकारी मीटिंग में बात रखती हूं मेरा सपना है कि श्री नरेंद्र मोदी जी के साथ चाय के बहाने अपनी मन की बात रखू। बालकनामा टीम को सभी अलग अलग अखबार के संदपाक ने बधाई भी दी और उन्हाने कहा कि आप बच्चे बहुत अच्छा कर रहे हो। आप बच्चे से हमलोग को एक अच्छी सीख मिली है।

शबाना की मदद से एक बच्ची पहुंची शेल्टर होम

बातूनी रिपोर्टर शबाना रिपोर्टर ज्योति

15 वर्षीय शबाना पहले स्टेशन पर कबाड़ा बीनने के लिए जाती थी और पुल के नीचे रहकर अपना व्यतीत करती थी। वर्तनाम में रैन बेसरा में रहती है और साथ ही संस्था के सहयोग से ओपन बेस्कि एजुकेशन की छात्र है और साथ ही साथ शबाना बालकनामा की बातूनी रिपोर्टर भी है। इनको जो भी बच्चा मुसीब्बत में नजर आता है उनकी मदद करती है। अभी हालेही में एक बच्ची झांसी से भागकर स्टेशन पर आ गई थी। स्टेशन पर आने की वजह कुछ ऐसी थी के इस बच्ची के पापा बहुत बुरी तरह से मारते थे और तो और इस बच्ची को खाना भी समय पर नही दिया जाता था। इसी कारण यह बच्ची निजामुददीन रेलवे स्टेशन पर भाग आई। और शबाना उसी रास्ते से गुजरते हुए जीए आरए पीए थाने में पढ़ाई करने जा रही थी। तभी देखा कि एक छोटी बच्ची रो रही है।

जब शबाना ने इस बच्ची से बात करने की कोशिश की तो बच्ची ने रोते और घबराते हुए कहा कि मुझे भूख और प्यास लगी है। फिर शबाना ने जी एआर एपी थाने में ले जाकर पानी पिलाया और शबाना ने उस बच्ची को तसल्ली पूर्वक आराम करने को कहा। तभी शबाना ने उस बच्ची कों सलाह दी। कि आप घर चले जाओ।

लेकिन उस बच्ची ने रोते हुए कहा कि मैं घर जाना नही चाहती हूं। मेरे घर में सभी लोग मुझे मारते पीटते रहते है। फिर शबाना ने चाल्ड हेल्प लाईन नम्बर की जानकारी देते हुए कहा कि आपको इनकी सहयोग से मैं शेल्टर होम भेजवा देती हूं। आप वहां पर सुरक्षित रह सकते है और उसी दिन शाम तक शबाना ने चाल्ड हेल्प लाईन नम्बर पर कॉल किया। चाल्ड हेल्प लाईन कार्यकर्ता के सहयोग से उस बच्ची को शेल्टर होम भेजवा दिया गया। अभी वह बच्ची शेल्टर होम सुरक्षित है।

शालू की हिम्मत को सलाम

बातूनी रिपोर्टर शालू रिपोर्टर चेतन

शालू अपने परिवार के साथ फर्नीचर ब्लॉक में रहती है। और इसकी उम्र 15 साल की है। इसके तीन बहन भाई है। शालू की मां अपने पैरो से लाचार है और पापा शराब पीते है। इसकी वजह से शालू के बहन भाई परेशान और भूखे रहते है। लेकिन इसके माता पिता कभी भी यह नही सोचते कि अपने बच्चों को पढ़ा लिखा लू। बस पिता शराब के नशे में लिप्त रहते है। इनको अपने परिवार के सदस्यों से कोई मतलब नही रहता है। जो व्यक्ति इनको शराब पीलाते है। उसके पास ही बैठे रहते है। और मां तो कुछ कर ही नही सकती है। इसलिए अब शालू अपने छोटे छोटे बहन भाई को पालने के लिए खुद जिम्मेदारी उठाई है। शालू का कहना है जिस तरह दूसरे बच्चे कबाड़ा बीनने के लिए जाते है। इस तरह मेरी बहन भाई नही जाए। इसलिए शालू एक कोठि में काम पर लग गई सुबह काम पर जाती है और शाम को घर लौटने के बाद भी अपने घर का सारा काम करती है जैसे खाना बनाना

अपने बहन भाई के वस्त्र साफ करना और साथ ही माता पिता का भी देखरेख करती है। वेशक शालू के पिता शराब पीते है। उनको भी ख्याल रखती है। जिस जगह पर शालू के पिता शराब पीकर पड़े.रहते है उस जगह से उठाकर घर लाती है। और वर्तमान में शालू अपने परिवार की जिम्मेदारी सम्भाल रही है।

बालकनामा और बढ़ते कदम सुर्खियों में

हम आपके साथ इन पलों से जुड़ी कुछ तस्वीरें शेयर कर रहे हैं...

आईटीएम यूनिवर्सिटी ग्वालियर ने अपने एडिटर कॉन्क्लेव में बालकनामा एडिटर्स टीम को भी आमंत्रित किया। इस कॉन्क्लेव में देश के दिग्गज पत्रकारों ने भाग लिया

स्ट्रीट चिल्ड्रन अपने स्कूल में मेरिट में आने पर मार्कशीट दिखते हुए

रेडिओ एफएम में बालकनामा के रिपोर्टर अपनी बात कहते हुए

सीएनएन ने बालकनामा के सम्बन्ध में रिपोर्ट प्रकाशित करके ये फोटो छापी

एक एडिटर कॉन्क्लेव में बालकनामा रिपोर्टर चेतन प्रश्न पूछते हुए

आईटीएम यूनिवर्सिटी द्वारा बालकनामा को भेजा गया आमंत्रण पत्र

बालकनामा का रिपोर्टर शम्भू टीवी चैनल को रिपोर्ट करता हुआ

यह पत्र सीमित वितरण के लिए है इस अंक में सभी चित्र बच्चों की अनुमति से प्रकाशित किए गए हैं

बालकनामा अखबार के प्रकाशन में सहयोग के लिए डायमंड स्पांसर सरदार नगीना सिंह का आभार व्यक्त करता है। आप भी बालकनामा के प्रकाशन में सहयोग दे सकते हैं।

बढ़ते कदम , 31 , बेसमेंट , गौतम नगर , नई दिल्ली - 110049 द्वारा प्रकाशित। न्यूजलेटर सीमित वितरण के लिए। बच्चों के चित्र उनकी अनुमति से प्रकाशित।
समर्थन के लिए संपर्क करें -balaknamaeditor@gmail.com फोन - 41644471